Sunday, 25 December 2011
Simultaneously published from: Allahabad, Agra, Bareilly, Dehradun, Gorakhpur, Jamshedpur, Kanpur, Lucknow, Meerut, Patna, Ranchi and Varanasi
Price : ₹ 1.00
Pages: 16+8

i next
हर दिन एक नई शुरुआत

Merry Christmas

Jagran
A JAGRAN INITIATIVE

weather

maximum temperature - 22.5 C
minimum temperature - 06.0 C
rainfall - nil
sunset - 5:20 pm
sunrise - 6:46 am

धंधेबाज

फर्जी मार्कशीट बनाकर स्टूडेंट्स को लूटने के साथ उनके फ्यूचर से भी खेलते थे ये आरोपी.

ये वे हैं जो students के future से खेलते हैं. उन्हें engineer तक बनाने के लिए किसी भी institution की मनचाही degree दस से पन्द्रह हजार रुपए में तैयार करके दे देते थे. इसे लेने वाले फंसें, जेल जाएं, इनकी बला से. इस खेल का खुलासा हुआ तो officers भी चौंक गए.

>> pg 8

PIC: MANISH KUMAR

i next SUNDAY sunnysideup

Jagran
A JAGRAN INITIATIVE

up & above

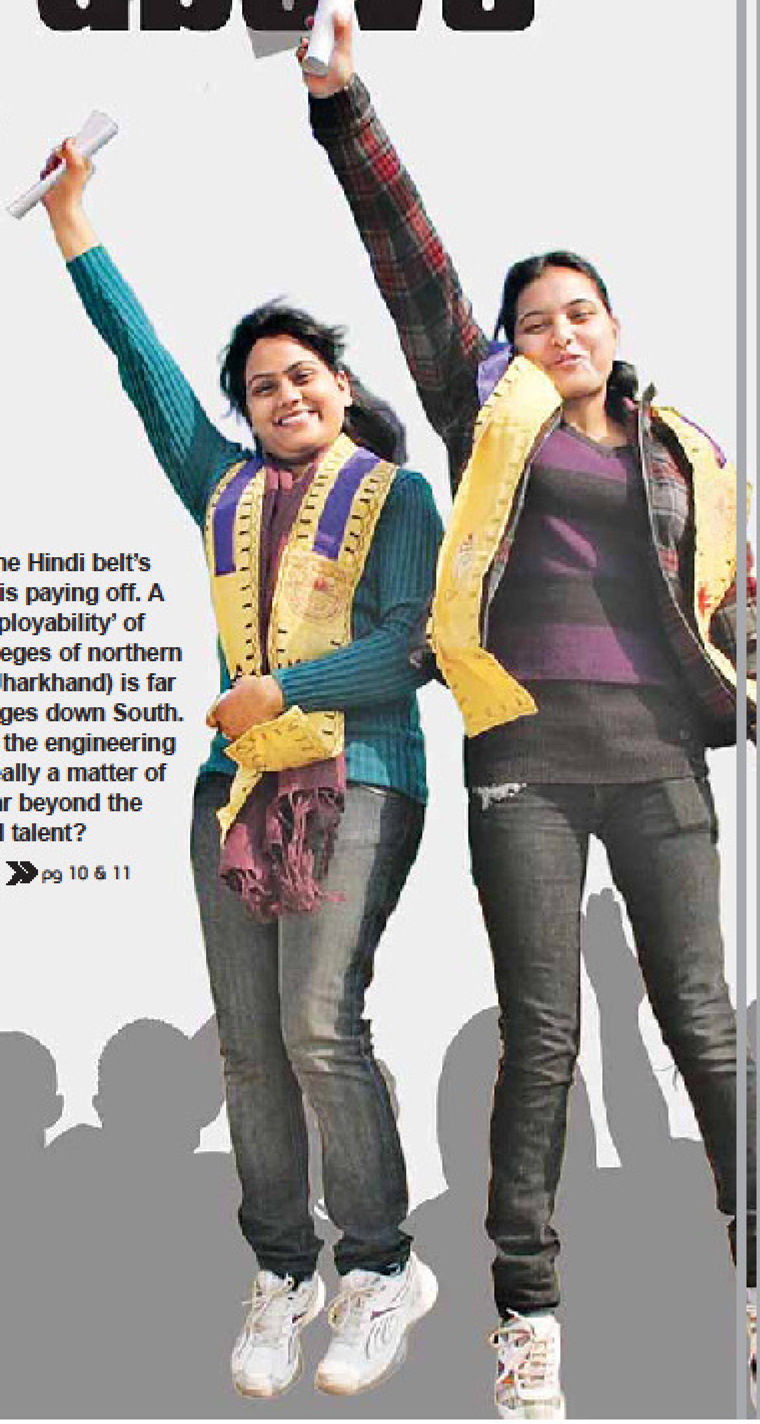

Engineering or medical! seems the Hindi belt's fascination for these two streams is paying off. A recent study claims that the 'employability' of engineering graduates from the colleges of northern India (particularly Delhi, UP, Bihar-Jharkhand) is far more than that of much touted colleges down South. The results may be exhilarating for the engineering aspirants in this region, but is it really a matter of 'regional' pride or the fact lies far beyond the education system and local talent?

pg 10 & 11

inside

velvet
fun with... -14

glam & glitz
dan2... - 12

your feedback

Dear Reader,

Sunday Special Issue is meant to make your weekend more interesting.
What do you think of it and are there any suggestions?

Do revert at editor@inext.co.in and kanpur@inext.co.in

cover story

study

is north the new

हिंदी belt में लम्बे वक्त तक engineering graduates को जो रुतबा हासिल रहा है, उसे पाने में MCA, MBA जैसी degree रखने वालों को काफी वक्त लग गया. Agency aspiring minds की ओर से 1.2 लाख engineering students पर की गई स्टडी ने engineering के इस fascination के अब थोड़ा कम होने के बाद भी, इस area के लिए कुछ positive sign दिया है.

पूरे देश में 'एम्प्लाएबिलिटी' या नौकरी दिए जाने के लायक इंजीनियर्स के लिए की गई एक स्टडी के मुताबिक दिल्ली के बाद, यूपी, बिहार और झारखंड सबसे ज्यादा क्वॉलिटी इंजीनियर प्रोड्यूस करते हैं.

यहां 'क्वॉलिटी' वर्ड को नौकरी पा सकने की उनकी कैपेसिटी के आधार पर तोला गया. ये रिजल्ट जॉब देने वाली कम्पनियों के एचआर के नजरिए से ही किए गए. यानी अधिकतर कंपनियों को किन इलाकों के इंजीनियर्स अपने काम के लगते हैं, या किन एरियाज के इंजीनियर्स के लिए उनका फीडबैक ज्यादा पॉजिटिव है.

what makes the engineers employable?

इंफोसिस और एक्सेंचर जैसी लीडिंग सॉफ्टवेयर कंपनी के साथ काम कर चुके रीतेश श्रीवास्तव अपना प्रोफेशनल एक्सपीरियंस शेयर करते हैं, 'बतौर इंजीनियर प्रोफेशनल लाइफ के चैलेंजेस ये हैं कि आप अपने काम के दौरान नया-नया सीखते रहें. आप किसी भी एरिया के किसी भी कॉलेज से निकले हों, अगर आप खुद को अपडेट नहीं रख सकते तो कंपनी में आपकी प्रोडक्टिविटी कम होती जाएगी.' रीतेश साफ करते हैं कि इसमें एक खास एरिया से निकलने वाले टैलेंट का रोल नहीं है क्योंकि असल में हर एरिया से निकलने वाले इंजीनियर्स टैलेंटेड हो सकते हैं बशर्ते उनमें जरूरी स्किल्स हों. इसमें दो-राय नहीं कि टॉप इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट्स सबसे बेहतर कंपनियां अट्रैक्ट करते हैं. किसी भी और प्रोफेशन की तरह इंजीनियरिंग भी सॉफ्ट स्किल्स और बेहतर टेक्निकल नॉलेज का मामला बन चुकी है.

मिल रही है quality education

हालांकि आईआईटी पटना के रजिस्ट्रार सुभाष पाण्डे मानते हैं कि काफी हद तक ये स्किल्स इंडिविजुअल कैपेसिटीज का मसला है. वह कहते हैं, 'किसी ऐसी स्टडी में टॉप पर आना साफ दिखाता है कि इस रीजन के अधिकतर कॉलेज क्वॉलिटी एजुकेशन दे रहे हैं. हालांकि आज के दिनों में स्टूडेंट्स की अपनी केपेबिलिटी और पैरेंट्स के सपोर्ट जैसी चीजें भी नकारी नहीं जा सकती. स्टूडेंट्स का बैकग्राउंड, या वह किसी स्कूल से आ रहे हैं जैसी चीजें उनके इंडिविजुअल एक्सिलेंस के सामने मैटर नहीं करतीं.'

महाराष्ट्र और कर्नाटक से कदम मिलाता यूपी

दिल्ली को छोड़ दें तो लम्बे वक्त तक नॉर्थ इंडिया के स्टूडेंट्स दूसरे स्टेट्स जैसे तमिलनाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक वगैरह को इंजीनियरिंग हब मानते रहे हैं. वजह रहे वहां के कॉलेज जो नॉर्थ इंडिया से कहीं ज्यादा हैं. एक तरीके से इसे यूपी, बिहार का गुडलक कहा जा सकता है कि प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन लेकर इंजीनियरिंग डिग्री लेने के ट्रेंड ने अभी यहां बहुत पॉपुलैरिटी नहीं पाई है. अभी भी इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स की पहली प्रायोरिटी होती है गवर्नमेंट कॉलेज में एडमिशन पाना. शायद ये रीजन है कि कॉम्पटीशन का लेवल बहुत नीचे नहीं आया.

वक्त के साथ बढ़े लोग

दिल्ली बेस्ड सोशियोलॉजिस्ट इम्तियाज अहमद इन रिजल्ट्स को सोशल स्ट्रक्चर और ट्रेडिशंस से भी जोड़कर देखते हैं. उनके मुताबिक, 'वक्त के साथ इन एरियाज में लोग बढ़े हैं. कॉम्पिटिशन का लेवल बढ़ा और रिजल्ट सामने है. साउथ में ये दौर काफी पहले आया था.' कई और एक्सपर्ट्स भी मानते हैं कि अब इंजीनियरिंग हर जगह के स्टूडेंट की पहली पसंद बनती जा रही है. जो इस फील्ड में आना चाहते हैं और इसमें ज्यादा से ज्यादा एक्सपेरीमेंट करने की छूट उन्हें आगे बढ़ने के लिए एनकरेज करती है. कई साल में ये बात भी सामने आई है कि स्टूडेंट्स अब इंजीनियरिंग को हौव्वा नहीं मानते बल्कि वो इस स्ट्रीम को एंजॉय करने लगे हैं.

ये quality की बात है

यूपी, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड के मुकाबले लंबे समय तक इंजीनियरिंग कॉलेज का हब माने जाने वाले स्टेट्स जैसे कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र वगैरह को देखें तो एक बड़ा अंतर सामने है. बीते कुछ वक्त में भले ही नॉर्थ के स्टेट्स में इंजीनियरिंग कॉलेज बढ़े हों लेकिन दूसरे स्टेट्स के मुकाबले ये रेशियो बेहद कम है. अगर मेट्रो में देखें तो 12, 565, 901 की पॉपुलेशन पर दिल्ली में 35 इंजीनियरिंग कॉलेज हैं वहीं 4,616,639 की पॉपुलेशन पर चेन्नई मे 84 कॉलेज हैं. गुंजाइश है कि काफी लम्बा अंतर इन फिगर्स में छिपा हो. ये स्टडी कंडक्ट करने वाली एजेंसी एस्पायरिंग माइंड्स के को-फाउंडर और सीईओ, हिमांशु अग्रवाल इशारा करते हैं,'हमने इस स्टडी के दौरान साफ तौर पर पाया कि बेहतर क्वॉलिटी इंजीनियर वहां हैं जहां कॉलेज कम हैं.' यानी मामला क्वॉलिटी है, जो हिंदी बेल्ट में इस बूते कुछ हद तक बनी रह पाती है क्योंकि यहां कॉलेज कम हैं. कॉलेजेस की भीड़ बढ़ना, कई पुराने इंजीनियरिंग हब्स के पीछे छूटने की एक वजह है. हिमांशु कहते हैं, 'जरूरत क्वॉलिटी एजुकेशन पर ध्यान देने की है.' यानी फिलहाल ये मामला इस एरिया की इंजीनियरिंग एजुकेशन की जनरल क्वॉलिटी का ज्यादा है.

Report By Rashmi Singh

I NEXT

- Employability in IT services companies is highest in North, followed by East, then West and then South.
- Delhi and Bihar-Jharkhand emerge as states with the largest percent.
- Delhi with its select colleges has emerged as an education hub with high standards of education and attracting the best minds from across the country. the employability of Bihar-Jharkhand is almost at par with Delhi.
- UP holds 1st rank amongst states considered as 'Engineering hubs' by the IT service sector.

Send your feedback at kanpur@inext.co.in or type 'iopinion' <space> 'your message' & SMS to 57272

cover story

engineering hub?

CONCEPT PIC

- In the North, Delhi, the National winner leads the pack, closely followed by Uttarakhand and Punjab.
- East sees Bihar leading with highest employability followed by West Bengal and Orissa.
- West sees Gujarat setting benchmarks with the highest employability, Madhya Pradesh follows in Central India.
- Kerala emerges with highest employability in the South, followed by Karnataka, Andhra Pradesh and Tamil Nadu.

viewpoint

बिहार-झारखंड या यूपी में बेहतर क्वॉलिटी के इंजीनियर्स निकलने का रिश्ता क्या सिर्फ यहां के कॉलेजेस से है, या इसका कोई दूसरा डायमेंशन भी है. हमने सवालों का जवाब लेने की कोशिश की एस्पायरिंग माइंड्स के सीईओ और को-फाउंडर हिमांशु अग्रवाल सेः

Regionally, it has been observed that employability in IT services companies is highest of engineers in the North, followed by East, then West and then South.

-Himanshu Aggarwal, Co-Founder and Director of Aspiring Minds.

- ***आपके मुताबिक कंपनिया इंजीनियर्स में क्या स्किल्स देखती हैं?***

कोई भी कंपनी कैंडिडेट्स में सॉफ्ट स्किल्स, टेक्निकल नॉलेज और टेक्निकल ट्रेनेबिलिटी का कॉम्बिनेशन ढूंढती है. सॉफ्ट स्किल्स में उनकी रिटेन और स्पोकेन इंग्लिश, ग्रामर, कॉम्प्रिहेंशन, वोकैब जैसी चीजें इम्पॉर्टेंस रखती हैं. टेक्निकल ट्रेनेबिलिटी एनालिटिकल स्किल्स और मैथ स्किल्स से ज्यादा रिलेटेड है. कुल मिलाकर या तो कंपनी ये चाहेगी कि कैंडिडेट आईटी स्किल्स में वेल ट्रेंड हो. या फिर ऐसा कैंडिडेट चाहेगी जिसका एप्टिट्यूड हाई हो जिससे उसे टेक्नोलॉजी में बेहतर ट्रेन किया जा सके.

- ***इंजीनियर्स की 'क्वॉलिटी' सीधे एजुकेशन फैसिलिटीज तो इंडिकेट नहीं करती. ये इसके सिवा एक खास स्टेट के सोशियो-इकोनॉमिक सीन का भी रिजल्ट तो हो सकती है?***

हां. किसी एक स्टेट में इंजीनियर्स की क्वॉलिटी कई पैरामीटर्स पर डिपेंड करती है. सोशियो-इकोनॉमिक सीन, एंट्रेंस का क्राइटेरिया, करियर चॉइस, सोशल डिजायरेबिलिटी, क्वॉलिटी ऑफ एजुकेशन ये सब इस नजरिए से इम्पॉर्टेंट हैं. स्टडी के रिजल्ट्स से ये बात साफ हो जाती है कि किसी एक रीजन में कॉलेजेस बढ़ा देने से पूरे देश के यूथ की एम्प्लॉएबिलिटी नहीं बढ़ाई जा सकती.

the other side

दिल्ली को छोड़ दें तो बिहार-झारखंड, यूपी और उत्तरांचल के इस स्केल पर बेहतर करने पर हम खुश हो सकते हैं. हालांकि इन रिजल्ट्स से कुछ दूसरी वजहें जुड़ी होने की पॉसिबिलिटी से भी इंकार नहीं किया जा सकता. फिलहाल आईबीएम पुणे में काम कर रहे अतीश भदौरिया (बदला नाम) शेयर करते हैं,'करीब पांच साल पहले गाजियाबाद के एक कॉलेज से बी.टेक. करने के दौरान मैंने रियलाइज किया कि वहां बहुत से रीजंस के स्टूडेंट्स थे. मगर इंजीनियरिंग को लेकर जितना पैशन और क्रेज यूपी-बिहार में रहा है दूसरे कई स्टेट्स शायद उस वक्त उनके सिवा कई दूसरे ऑप्शंस भी एक्सेप्ट करने लगे थे. हममें से अधिकतर के लिए एक टॉप इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन सोशल रेप्युटेशन का मामला भी था, जबकि कई और रीजन के स्टूडेंट्स के लिए इंजीनियरिंग पैशन का केस भी था. हो सकता है कि ये ऑब्जर्वेशन जनरलाइज ना किया जा सके लेकिन हिंदी बेल्ट में आज भी इंजीनियरिंग के इंटलेक्चुअल और सोशल स्टेटस वाले टैग से इंकार नहीं किया जा सकता.' पूरी गुंजाइश है कि आज भी ये टैग इस एरिया की क्रीम अपनी ओर खींचता है, जो कि इस एरिया में अभी कोई और कोर्स उतनी शिद्दत से नहीं कर पाया.

“

'मैंने आज से करीब पांच साल पहले मुंबई में अपनी कंपनी शुरू की थी. पांच साल के भीतर ही इसने काफी अच्छा प्रोग्रेस कर ली है. मेरी कंपनी में आधे से ज्यादा इंप्लॉई यूपी और बिहार से बिलांग करते हैं. कोई एमबीए है तो कोई इंजीनियर है और शायद इनकी वजह से मेरी कंपनी सक्सेजफुल हो पाई है.'

-राहुल रंजन मुंबई.

data speaks

भारत जल्द ही इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के मामले में चीन को पीछे छोड़ देगा. पांच साल पहले हुई एक स्टडी के मुताबिक चीन में हर साल पांच लाख से भी ज्यादा इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स पासआउट होते हैं. वहीं भारत में उस समय ये आंकड़ा करीब साढ़े चार लाख स्टूडेंट्स का था. एक्सपर्ट्स की मानें तो 2015 तक भारत में हर साल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वाले स्टूडेंट्स की संख्या 10 लाख से ज्यादा हो सकती है.

Send your feedback at kanpur@inext.co.in or type 'iopinion' <space> 'your message' & SMS to 57272